ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 98-100**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

तेजेंद्र शर्मा के प्रवासी कथा साहित्य में उपस्थित वैश्विक समस्याएं

प्रोफेसर विजय कुमार प्रधान, 2. वंदना

शोध निर्देशक एवं विभाग अध्यक्ष, 2. शोध अध्येत्री– हिंदी एवं आधुनिक भाषा विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक (राजस्थान) भारत

Received-01.05.2026, Revised-08.05.2026, Accepted-15.05.2026, **E-mail:vandana.kathuia@gmail.com**

सारांशः आधुनिक वैश्वीकरण के इस युग में प्रवासन सबसे जटिल समस्या बनकर रह गया है। प्रवास केवल मनुष्य का ही नहीं होता अपितु उसके साथ–साथ उसकी पहचान, संस्कृति, रीति रिवाज, रिश्तों का भी होता है। प्रवासन मनुष्य को सामाजिक और मानसिक रूप से प्रभावित करने वाली एक जटिल प्रक्रिया है। जब भी कोई व्यक्ति प्रवास करता है तब वह अकेला नहीं होता, उसके साथ उसके संघर्ष, सपने, संबंध, अनुभव, स्मृतियां आदि सब उसके साथ ही प्रवास करती है। प्रवासी जीवन की प्रक्रिया उसके जीवन को अंतर्द्वंदों से भर देती है। एक ओर मनुष्य को अपने नए परिवेश में जाने का उत्साह होता है, अपने सपनों की मंज़िल नज़दीक लगती है, भविष्य सुनहरा लगने लगता है, वहीं दूसरी ओर उसे उसकी अपनी संस्कृति, पहचान, परिवार, परिवेश, आदि के साथ भावात्मक संबंध उसे पीछे की ओर खींचने लगता है। अपनी जड़ों से दूर हो जाने का दर्द, अपने नए परिवेश कोअपनाने पर होने वाली समस्याओं की कल्पना के भय के कारण वह द्वंदात्मक स्थिति में पहुचकर अपने मनोबल को कमजोर इन ही द्वंदनात्मक पाता है। इन्हीं द्वंदात्मक स्थिति से उत्पन्न उसकी संवेदनाएं 'प्रवासी संवेदनाएं' कहलाती हैं। प्रवासी साहित्य लेखन इन्हीं जटिल संवेदनाओं का परिणाम है। प्रवासी व्यक्तियों का अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम है लेखन। प्रवासी भारतीयों ने अपनी भावनाओं, दर्द, अकेलेपन, अपनी पीड़ा, भेदभाव आदि को व्यक्त करने के लिए माध्यम के रूप में हिंदी को चुना। हिंदी साहित्य का सृजन भाषा के रूप में आज पूरे विश्व में हो रहा है। कहानी, उपन्यास, कविताएं, गजलें, या अन्य कोई रूप हो, विश्व में हिंदी की स्थिति प्रवासी लेखन के कारण मजबूत हो गई है।

कुंजीभूत शब्द– वैश्वीकरण, प्रवासन, संस्कृति, रीति रिवाज, संवेदनशीलता, शोषण, मनोविज्ञान, यथार्थ, सशक्त, संघर्ष, प्रवासी संवेदनाएं।

समकालीन हिंदी कथा साहित्य के सशक्त लेखक तेजेंद्र शर्मा, प्रवासी साहित्य में अपना विशेष स्थान रखते हैं। अपने कथा संसार में उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर संवेदनात्मकता की गहराई और मनोविज्ञान को आधार बनाकर मील का पत्थर साबित होने वाली एक से बढ़कर एक कहानी को लिखकर युवा पीढ़ी को न केवल संदेश दिया अपितु समस्याओं का सामना करने का साहस भी दिया। प्रवासी जीवन की केवल बाह्य घटनाओं को ही नहीं, बल्कि प्रवासी व्यक्ति के भीतर उठ रहे ज्वार भाटा को भी वे सशक्त शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। तेजेंद्र जी के पात्र प्रवास के पश्चात दो विभिन्न परिस्थितियों, संस्कृतियों के बीच पिसते दिखाई देते हैं। तेजेंद्र शर्मा की कहानी विदेशी ज़मीन की चकाचौंध की, आर्थिक सफलता से परिपूर्ण सुंदर जीवन का दस्तावेज नहीं है बल्कि असुरक्षा, पहचान के संकट, भावनात्मक टूटन की जटिल प्रक्रियाओं का भी लेखा जोखा है।

प्रवास मनुष्य का अभिन्न अंग रहा है। प्रवास से वह स्वयं को कभी भी अलग नहीं कर सकता। कभी नई खोज, व्यापार, प्राकृतिक आपदाएं, रोजी–रोटी, राजनीतिक कारण, आर्थिक कारण,भौगोलिक कारण आदि सदैव प्रवास की जटिल प्रक्रियाओं से मनुष्य को गुजरने के लिए विवश करते रहे हैं। प्रवास दो प्रकार का है : 1 आंतरिक प्रवासन, 2 सरहदों के पार प्रवासन।

आंतरिक प्रवासन के अंतर्गत व्यक्ति अपने देश की सीमा के भीतर ही एक राज्य से दूसरे राज्य में प्रवास करते हैं। एक ही देश में प्रवासी हो जाना। आंतरिक प्रवासन में राज्य बदलते हैं, किंतु सरहद और नागरिकता नहीं बदलती। सरहदों के पार प्रवासन व्यक्ति को एक देश से दूसरे देश में ले जाता है। यहां व्यक्ति की केवल भौगोलिक ही नहीं अपितु उसकी नागरिकता भी बदल जाती है। प्रवासन आंतरिक हो अथवा सरहद के पार दोनों ही कभी इच्छा से होते हैं तो कभी किसी मजबूरी वश। रोजगार, व्यापार, शिक्षा, विवाह, आदि ऐसे अनेक कारण है, जो प्रवास के लिए विवश करते हैं।

स्वप्न द्रष्टा तेजेंद्र शर्मा प्रवासी साहित्यकार है। उन्होंने अपना जीवन दो विपरीत संस्कृतियों में जिया है। यही कारण है कि वह प्रत्येक परिस्थिति का बारीकी से निरीक्षण करते हैं। तेजेंद्र जी की कहानी इसलिए विशिष्ट है क्योंकि वह नवीन वातावरण में उत्पन्न होने वाली समस्याओं को जिस प्रकार से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं वह उन पाठकों की कहानी बन जाती है। तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में उनके पात्रों के माध्यम से उन्होंने कई समस्याओं को अपनी कहानियों में उठाया है। अपनी कहानियों में स्त्री–पुरुष के चरित्रों का अंतर्द्वंद्व तो है, ही साथ ही मृत्युबोध को भी महसूस किया जा सकता है। लेखक के रूप में तेजेंद्र जी का व्यक्तिगत दुःख जैसे उनकी कहानियों का आधार बन गया है।

प्रसिद्ध प्रवासी लेखिका नीना पॉल के शब्दानुसार, "तेजेंद्र जी की ज्यादातर कहानियों में भोगा हुआ यथार्थ प्रमुख विषय रहा है। वह कहानी सुनाते नहीं है बल्कि दिखाते हैं और कहानी में घटना वाले कारणों को खोजते दिखाई देते हैं। उनकी कहानियाँ जीवंत होकर हमें संवेदना की दृष्टि से झंकझोर कर रख देती है। ये कहानियाँ वास्तविकता के धरातल पर रची गई है। जो भाव इनकी कहानियों में दिखाई देता है वह विश्व के किसी भी कोने में सहज ही दिखाई दे जाते हैं।"[1]

अस्तित्व का संकट और नाम विमर्श– प्रवासी जीवन में पहचान का संकट एक अत्यंत जटिल समस्या रही है जिसे तेजेंद्र शर्मा ने अपनी कहानियों में अत्यंत सूक्ष्मता से सफलतापूर्वक अभिव्यक्त किया है। तेजेंद्र जी ने विश्वव्यापी समस्या सांप्रदायिकता पर आधारित अपनी प्रसिद्ध कहानी चरमराहट में कहानी के नायक का सहारा लेकर इस समस्या को उजागर किया है। कहानी के नायक का नाम 'इंद्रमोहन तिवारी' है, जो बचपन में सांप्रदायिकता के कारण अपना नाम बदल कर 'आई एम हिंदुस्तानी ', रख लेता है। अयोध्या हादसे के बाद जब वह अयोध्या जा रहा था तो अपना नाम बताने पर लोग कहते हैं कि, "साहिब हम यही तो कहते हैं पहले हम हिंदू हैं: हिंदुस्तानी, बाद में कुछ और भारतीय तो हमें कई मिले, पर हिंदुस्तानी आप पहले मिले हैं। हमारी सभ्यता, हमारा कल्चर, हमारा इतिहास...। हिंदुस्तानी का सिर चकराने लगा। आज एक बार फिर उसे अपने नाम से सांप्रदायिकता की बू आने लगी थी।"[2]

प्रवासी जीवन में अकेलापन व द्वंदग्रस्त मानसिकता– अकेलेपन का संबंध अवसाद या चिंताओं के कारण तनाव से उत्पन्न होना होता है। यदि आधुनिक काल की बात की जाए तो अकेलापन महामारी का रूप ले संपूर्ण विश्व में फैलता जा रहा है। यह अकेलापन केवल अपने देश या अपनों से दूर होने का परिणाम नहीं होता बल्कि यह भावनात्मक, सांस्कृतिक और संबंधों के विखंडन से उत्पन्न होता है। प्रवासी पात्र चाहे भौतिक रूप से कितने ही समृद्ध परिवेश में क्यों ना रहते हो, लेकिन वह एक मानसिक स्तर पर

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

एक गहरे खालीपन को अनुभव करते हैं। तेजेंद्र जी ने अकेलेपन के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही रूपों को अपनी कहानियों में स्थान दिया है।

'एक बार फिर होली' कहानी में नायिका का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध पाकिस्तान में करवा दिया जाता है। अपनी ससुराल जाकर भी वह देश अपने लोगों को अपने से दूर नहीं कर पाती और एक द्वंद्वात्मक स्थिति में सदैव रहती है।

"एक फौजी की पत्नी चाहे किसी भी देश में क्यों ना हो अकेलापन उसका सबसे बड़ा साथी होता है।"[3]

यह कथन एक पत्नी अथवा स्त्री के अकेलेपन के कारण उत्पन्न होने वाले दर्द को ही बयान नहीं करता बल्कि उसके संबंधों की रिक्तता को भी उजागर करता है।

बदलते जीवन मूल्य तथा मानवीय संवेदनहीनता– व्यवहारिकता के काल में आज लोगों की सोच बदल गई है। हृदय की अपेक्षा अपने मस्तिष्क का उपयोग प्रत्येक रिश्ते में करने लगे हैं। तेजेंद्र जी के कथा साहित्य में भारतीय जीवन मूल्यों की उपस्थित सदैव रही है। किंतु तेजेंद्र जी ने तेजी से बदलते जीवन और सोच को पकड़ कर उस पर अपनी कई कहानियों के माध्यम से समाज को आईना दिखा दिया है। काला सागर, गोद उतराई,दूसरे श्रवण का शिकार, अपराध बोध का प्रेत, मुट्ठी भर रोशनी आदि कई कहानियों के माध्यम से उन्होंने समाज में फैली संकीर्ण मानसिकता को दर्शाया है।

तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता की सीधी सीधी चर्चा भले ही कम की गई हो लेकिन उनके भीतर निहित मानवीय संवेदनाएं, नैतिक दुविधाएं उनके लेखन में सरलता से देखी जा सकती हैं। उनका लेखन मानवीय संवेदनशीलताओं का सागर है। तेजेंद्र शर्मा जी की कहानी 'शोक संदेश' में भी मानवीय संबंधों में आई कटुता के कारण नफ़रत में पले रिश्तों का बहुत मार्मिक वर्णन किया गया हैं।

"इसका एक बेटा ऑलीवर और बेटी टीना थी। 1970 में वह अपने देवर एलन से प्रेग्नेंट हो गई और फिर उसके साथ भाग गई। उसने अपने बच्चों को बिना किसी सहारे छोड़ दिया। उन्हें उनके नाना नानी एंटनी और एंजेला ने पाला। लूसी की मृत्यु 4 अप्रैल 2020 को करोना वायरस से हो गई। अब उसे भगवान के पास जाकर अपनी करतूतों का जवाब देना होगा। ओलीवर और टीना को उसकी याद कभी नहीं आएगी। सच तो यह है कि उसकी मौत के बाद, यह धरती एक रहने लायक जगह बन जाएगी।"[4]

एक मां के अपने छोटे मासूम बच्चों को छोड़ कर चले जाने का दर्द बड़े होने पर घृणा में बदल जाता है कि वह अपनी मां की मृत्यु पर इस तरह का शोक संदेश लिखते हैं।

आधुनिक समाज और पुरुष विमर्श– 21वीं सदी को आधुनिकता तथा नव जागरण की पराकाष्ठा को एक पर्व के रूप में स्वीकार किया गया। जैसे–जैसे समय बदला वैसे वैसे उसे साहित्यकारों की कलम नई–नई समस्याओं पर अपना मत लेकर तथा उनके समाधान की खोज में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने लगी। समस्या व्यक्तिगत हो अथवा सामाजिक, साहित्यकारों ने उन्हें पूरी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया है। पुरुष प्रधान समाज में पुरुष पर ही अत्याचार, उसका मानसिक, शारीरिक अथवा आर्थिक शोषण यह जल्दी से स्वीकार करने वाले तथ्य नहीं है। पुरुष विमर्श एक ऐसी समस्या है, जिस पर या तो बात ही नहीं की जाती या फिर उसे गंभीरता से नहीं लिया जाता। पुरुष के मानसिक प्रलाप को सुनने के लिए विशेष प्रकार की श्रवण शक्ति चाहिए,जो कि तेजेंद्र शर्मा के पास है। कुछ कहानियों में उन्होंने इस समस्या को बखूबी उठाया है। तेजेंद्र शर्मा की इस विषय पर लिखी सबसे चर्चित कहानी 'अभिशप्त'[5] है। अच्छे जीवन की उम्मीद में लंदन जाकर बस गए रजनीकांत की कहानी है, जो वहां भी सुख नहीं पाता। रजनीकांत विदेश में नागरिकता लेने के लिए अपने से 3 वर्ष बड़ी निशा से विवाह कर लेता है, किंतु विवाह के पश्चात निशा अपने पति पर मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न आरंभ कर उसका जीवन नरकीय बना देती है। आत्मग्लानि की भावना के पश्चात भी वह इस दलदल से बाहर नहीं निकल पाता क्योंकि वह किसी भी तरह से ब्रिटिश की नागरिकता प्राप्त कर लेना चाहता है।

"रजनीकांत तुम कुछ नहीं करोगे, ना तुम अपनी पत्नी को छोड़ोगे और ना यह देश। तुम और तुम्हारे दोस्त यह जीवन जीने के लिए अभिशप्त हो। अपनी अपनी पत्नियों के साथ रहना तुम्हारी नियति बन गया है, तुम चाह कर भी इस जीवन की सुविधाओं को छोड़ नहीं सकते। तुम उन लोगों में से हो जो रोज शाम को शराब के गिलास पर सवार होकर अपने देश वापिस चले जाते हैं और सुबह होते ही जब नशा उतर जाता है ठंडी रोटी खाकर वेयरहाउस पहुंच जाते हैं। गांव और मुल्क, अब सिर्फ तुम्हारे ख्यालों में रह सकते हैं। तुम्हारी वापसी अब मुमकिन नहीं। तुम्हें यही जीना है और एक दिन यही मर भी जाना है।"[6]

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से तेजेंद्र जी आज की युवा पीढ़ी की मानसिकता को भी दर्शाते हैं जो विदेश की चकाचौंध से प्रभावित होकर अपने आत्मसम्मान तक से समझौता करने में नहीं हिचकिचाते। किराए का नमक, बदलेगी रंग जिंदगी आदि पुरुष विमर्श पर लिखी अन्य कहानियों में तेजेंद्र जी ने पुरुष की पीड़ा को सफलतापूर्वक अभिव्यक्त किया है।

चर्चित लेखिका डॉक्टर प्रीत अरोड़ा ने अभिशप्त कहानी को पुरुष विमर्श का सशक्त उदाहरण बताते हुए लिखा है कि "इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ने पुरुष–मन के भीतर आर्थिक स्वावलंबन, अधिकार–चेतना, व्यक्तित्व की महत्ता व जीवनदृष्टि आदि जैसी भावनाओं को प्राप्त न कर पाने की टीस को प्रस्तुत कर पुरुष विमर्श को एक नया आयाम दिया है।"[7]

विदेशी ज़मीन पर नारी शोषण– तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में नारी चेतना का चित्रण अत्यंत संवेदनशील और आलोचनात्मक है। जहां वे पितृसत्तात्मक समाज में नारी की स्थिति, उसके संघर्ष और विद्रोह को सशक्त ढंग से प्रस्तुत करते हैं। प्रवासी संदर्भ में नारी की स्थिति और भी जटिल हो जाती है, जहां वह दो संस्कृतियों के बीच में भटकती है और जो नई जड़ों की तलाश करने की बेचैनी को महसूस करती है। यह पहचान के बहुआयामी संकट को दर्शाता है, जहां उसे अपनी सांस्कृतिक जड़ों और नए परिवेश के बीच सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। तेजेंद्र जी की कहानियों में नारी की अस्मिता की सामाजिक–सांस्कृतिक मांग का पुरजोर विरोध किया जाता है, समाज ने नारी और पुरुष के लिए भिन्न–भिन्न प्रतिमान निर्धारित कर रखे हैं। यह लैंगिक असमानता और रूढ़िवादी मानदंडों पर आलोचनात्मक टिप्पणी है जो नारी को एक वस्तु के रूप में देखने की प्रवृत्ति को चुनौती देती है। तेजेंद्र जी नारी के कुंठा से भरे जीवन का सबसे बड़ा कारण आर्थिक पराधीनता तथा अशिक्षा को मानते हैं। अपराधबोध का प्रेत, मुट्ठी भर रोशनी, गंदगी का बक्सा, मलबे की मालकिन, फ्रेम से बाहर, कोख का किराया, देह की कीमत आदि कई ऐसी कहानियां है, जो स्त्रियों के संघर्ष को प्रस्तुत करती है।

'छूता फिसलता जीवन' कहानी की नायिका मैंडी जेम्स नाम के एक व्यक्ति से एक तरफा प्रेम कर बैठी है और अपना सब कुछ उसे पर निछावर कर देना चाहती है। लेकिन जेम्स एक दिन मौके का फायदा उठाकर मैंडी के साथ बलात्संग करता है साथ ही साथ

मैंडी को किसी को ना बताने की हिदायत भी देता है। वह धमकी देता है कि यदि उसने यह बात किसी से बताई तो वह उसको बर्बाद कर देगा। अपने पिता का साथ पाकर मैंडी जेम्स के खिलाफ रिपोर्ट करवा देती है।

"नहीं! ऐसा नहीं है। उसने सही कदम उठाया है। जब वह स्वयं जानवर नहीं है तो किसी जानवर को अपने इज्जत से क्यों खेलने दे?"[8]

प्रवासी जीवन में मृत्यु का दंश– तेजेंद्र शर्मा की कहानियां केवल सामाजिक यथार्थ को पकड़ने का ही प्रयास नहीं करती, बल्कि वह मनुष्य की मनोवैज्ञानिक दशाओं का विश्लेषण भी करती है। उनकी कहानियों में मृत्यु चाहे जितनी गहरी उपस्थिति रखती हो, जीवन की ओर लौटने की इच्छा, अर्थ की तलाश और अस्तित्व को बचाने का संघर्ष हमेशा उससे कहीं अधिक शक्तिशाली होकर उभरता है तथा उसे सफलता भी दिलवाता है। तेजेंद्र शर्मा ने बहुत करीब से मृत्यु को न केवल देखा है बल्कि उसके दर्द को सहा भी है। शायद यही कारण है कि उनकी कहानियों में मृत्यु विशेष रूप से उपस्थिति रहती है।तेजेंद्र जी की कहानियों में मृत्यु के अलग अलग रूप देखने को मिलते है। उनके पात्र मृत्यु से डरते नहीं अपितु उसकी आंख में आंख डालकर उसका सामना करते हैं।

'यह उत्सव मेरा है' कहानी की नायिका लूसी कर्क रोग से पीड़ित है। उसके जीवन का अंतिम समय उसके सामने है। लूसी का मानना है कि मृत्यु का स्वागत वह रोकर नहीं करेगी। अपनी ओर एक–एक पग बढ़ती हुई मृत्यु के भय से वह अपनी अंतिम सांस नहीं लेगी। वह एक ऐसा निर्णय करती है जिससे सभी अचंभित हो जाते हैं। लूसी की अंतिम इच्छा है कि वह अपनी मृत्यु से पहले अपनी अंतिम या देख सके। वह चाहती है कि उसके मृत्यु के पश्चात जो कुछ लोग उसके बारे में बोलेंगे वह अपने जीते जी सुन लेना चाहती है। अपनी अंतिम यात्रा के लिए लूसी प्रसिद्ध गायक एड शीरन को आमंत्रित करती है और उसी का गीत सुनते सुनते अपने प्राण छोड़ देती है।

"जब गीत खत्म हुआ...लोग अपनी गीली आंखें पोंछ रहे थे...विलियम ने लूसी की व्हीलचेयर चलाई, तो लूसी का शरीर लुढ़क गया....उसने जल्दी से लूसी के बदन को छुआ...वह वहां नहीं थी...वह अपना उत्सव देखकर अपनी यात्रा पर एड शीरन के गीत–संगीत पर सवार होकर निकल गई थी।

उसकी आत्मा दाहगृह के शोक संतप्त माहौल में कह रही थी –
मौत, तू घमंड ना कर
कुछ लोग तुझे ताकतवर मानते हैं
मगर तू है नहीं
मैं अब सोने और जागने के चक्र से मुक्त हूं
तू हार गई मौत
यह तेरी मृत्यु है!"[9]

निष्कर्ष– तेजेंद्र शर्मा के कथा साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण व सशक्त पक्ष है उनका नकारात्मक परिस्थितियों में भी सकारात्मकता को तलाश कर ले आना। प्रवासी जीवन की चुनौतियां, अकेलापन, रंगभेद, स्वयं को स्थापित करने का संघर्ष आदि को वह आत्म –,सृजनात्मकता के रूप में स्वीकारते हैं। विपरीत परिस्थितियों में कैसे डट कर सामना कर उन्हें हरा देने की काबिलियत तेजेंद्र जी के पात्रों में कूट–कूट कर भरी है। कहानियां समाज में संदेश पारित करती है कि जीवन में आने वाली कठिनाइयां व्यक्ति के जीवन में उसके चरित्र को सुदृढ़ करने, परिपक्व करने और अधिक सशक्त करने के लिए ही आती है। तेजेंद्र जी अपने पात्रों के माध्यम से लोगों के समक्ष प्रेरणा प्रस्तुत करते हैं कि नैतिक मूल्य ही शांत और संतुलित जीवन का आधार है।

तेजेंद्र शर्मा के कथा संसार में प्रवासी जीवन की जटिलताएं तो है ही साथ ही साथ उनका समाधान भी है। प्रवासी संवेदना केवल विस्थापन की पीड़ा तक ही सीमित होकर नहीं रह गई है, बल्कि एक ऐसे अनुभव के साथ आती है जो प्रेम की पहचान, नैतिकता, पारिवारिकता, समानता, भविष्य की योजनाएं, प्रेम, समर्पण, आत्मविश्वास आदि को समाएं है। तेजेंद्र जी अपनी कहानियों के माध्यम से स्पष्ट करते हैं कि भौगोलिक दूरी होने के पश्चात भी व्यक्ति यदि चाहे तो वह अपनी संस्कृति, सभ्यता, देश प्रेम, अपने नैतिक मूल्यों को बनाए रख सकता है। तेजेंद्र शर्मा का लेखन केवल प्रवासी लेखन ही नहीं है अपितु वह दो देशों की विभिन्न संस्कृतियों के मध्य का शक्तिशाली सेतु है। भारतीय संस्कृति को धरोहर के रूप में लेकर विदेश में बस गए प्रवासियों को उसे और अधिक समृद्ध व सुदृढ़ करने की अपील भी करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वैश्विक स्वप्न द्रष्टा; तेजेंद्र शर्मा, डॉ एम फिरोज़ ख़ान, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2022, पृष्ठ संख्या 134.
2. स्मृतियों के घेरे; तेजेंद्र शर्मा, यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2019 पृष्ठ संख्या 138.
3. एक बार फिर होली, नयी ज़मीन नया आकाश; (समग्र कहानियां 2) तेजेंद्र शर्मा, यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2019, पृष्ठ संख्या 335.
4. शोक संदेश, संदिग्ध; तेजेंद्र शर्मा, शिवना प्रकाशन, सीहोर, 2023, पृष्ठ संख्या 144.
5. अभिशप्त, नयी ज़मीन नया आकाश समग्र कहानियां 2; तेजेंद्र शर्मा यश, पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2019 पृष्ठ संख्या 329.
6. नयी ज़मीन नया आकाश; (समग्र कहानियां 2), यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2019 पृष्ठ संख्या xiv.
7. छूता फिसलता जीवन, नयी ज़मीन नया आकाश; समग्र कहानियां 2, यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2019 पृष्ठ संख्या 375.
8. ये उत्सव मेरा है, गोद उतराई; तेजेंद्र शर्मा, शिवना प्रकाशन, सीहोर, पृष्ठ संख्या 99–100.

. *****